Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Vol. 4 | Issue. 4 | Jan. 2015

# आजादी के बाद का भावबोध 'माटी-पा□ी' □हा-नी सं□ह

**अलोने चंद्रशेखर त्रिंबक**

हिंदी विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता.जि. औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत,

***सारांश :***

*आजादी के बाद परिस्थितियाँ बदली । बदलती परिस्थितियों में कुछ बातों का स्वीकार और विरोध की प्रक्रिया जलद गतीसे चलने लगी । इस प्रक्रिया में व्यक्ति मन की अवस्था बेचैन दिखायी दी । इसी बेचैनी को डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर के 'माटी-पा-नी' □हा-नी संग्रह प्रस्तुत करता है ।*

**प्रस्तावना :**

डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर समकालीन लेखक के रूप में उभरकर सामने आये हैं । इन्होंने कुल १० कहानी संग्रह और छह उपन्यासों लि□ है । 'माटी-पानी' यह कहानी संग्रह सन् १९९९ को प्रकाशित हुआ है । इसमें कुल १२ कहानियाँ है ।

**संशोधन पद्धती**

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धती द्वारा लिखा गया है ।

**आजादी के बाद □ा भावबोध - 'माटी-पा-नी' :**

**आत्मजीवी** :

'आत्मजीवी' रामेश्वर भाई और कृपाशंकर नामक दो मित्रों की कहानी है। दोंनों एक ही गाँव में छोटे से बडे हुये, एक ही संस्कार में पढ़े लिखे, बाद मे उच्च शिक्षा प्राप्त कर शहर में जाकर बसे। कहानी के पात्र रामेश्वर भाई प्रतिनिधित्व है शहरी संस्कारों का तो कृपाशंकर जो शहर में स्थित होने के बाद भी अपनी माटी-पानी के संस्कारों को कतई नहीं भूलते हैं। प्रस्तुत कहानी में लेखक इन दो पात्रों

 माध्यम से हमें यह समझाना चाहते हैं कि असली सुख क्या है? उसके आनंद की प्राप्ति कैसे हो सकती है । भौतिक साधनों का संग्रह करके प्राप्त नहीं हो सकती । आत्मा की तृप्ति तो अपने आत्मजीवी के सहवासों में होती है जो हमारे सुखदुख में हमारा साथ देते हैं। व्यक्ति चाहे कितने भी बडे ओहदे पर क्यों न हो लेकिन उसके पास कर्तव्यपरायणता और कृतज्ञता न हो तो उस व्यक्ति की स्थिति बिना संस्कारी कुत्ते के समान होती है। कहानी में आये एक दृष्टांत से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि, "कार की चाबी उँगलियों में झुलाते हुए रामेश्वर भाई हँसे 'कुछ कर नहीं पाओगे कृपाशंकर । कुछ नहीं करा पाओगे जीवन में' वे मेरे करीब आ गये और समझाते हुए कहने लगे, 'देखो कृपाशंकर वही पेड़ ऊपर निकलता है जिसको झाड झंखाड़ उलझा नहीं लेते। मैंने हँसते हूए झट से कहा' आप बाग-बगीचे के अल्पजीवी पेड़ों की बात कर रहे हैं रामेश्वर भाई। शाल, शीशम, बरगद, पीपल, शिरीष-इनको झाड झखांड रोक पाते हैं ? जिन पेड़ों में माद्दा होता है वे झाड झंखाडों में उलझते हुए भी आकाश छूने लगते हैं।" इस प्रकार से प्रस्तुत कहानी सांस्कृतिक ऱ्हास के साथ साथ संक्रमण को भी हमारे सामने रखती है।

**जाहिल :**

'जाहिल' कहानी का प्रमुख पात्र है अब्बास। जो अविकसित शरीर और अविकसित मस्तिष्कवाला है। कहानी में अब्बास का मानवीय गुणों से संपन्न व्यक्तित्व के रूप में चित्रण मिलता है। अपनी ऐश अरामी दिखाऊ जिंदगी जीनेवाले शकील साहब को सडक पर और गली में झगड़ती औरतें और अब्बास का रहना पसंद नहीं है। और छोटी छोटी बातो पर घूस्सा करते हैं। जैसे सी-ना -नौरा-नी से चाय की प्याली जब टूटती है तो वह उसे बेरहमी से मारते है, 'जाहिल' कहानी एक ओर अब्बास और उन महिलाओं को हमारे सामने रखती है जिन्हें अब्बास जैसे पात्र जाहिल मानते है तो दूसरी ओर अब्बास जैसे पात्र होते है जिनका व्यक्तित्व जाहील से भी बदत्तर दिखाई देता है।

**द्वारपूजा :**

प्रस्तुत कहानी जाति-व्यवस्था के बदलते तेवर को दर्शाती है। जब कोई हरिजन कलेक्टर या कोई ऊँचे ओहदे पर पहुँचता है।तब वह हरिजन न रहकर उच्च जाति का आराध्य बन जाती है। और ऊँची जाति के लोग उनसे अपने काम करवा लेते हैं। इसके लिए ऊँची जाति के लोग निम्न जाति के लोगो के द्वार के सेवक बनाने के लिए तैयार है। इसी भाव को लेकर यह कहानी लिखी गई है। कहानी नायक छूतहरू जो कलेक्टर बन चुंके हैं। चंद्रदेव सिंह ब्राम्हण है। जब छूतहरू छोटे थे तब चंद्रदेव सिंह उन्हें 'रे छूतहरूआ' कहकर पुकारते थे लेकिन अब वह उन्हें हुजूर कहकर पुकारते हैं। कलेक्टर साहब की बेटी की शादी में मेहमान के स्वागत हेतु दरवाजे पर खडे रहते हैं। "सारी माया पद और पैसे की है बाबू साहाब जो बाबू चंद्रदेव सिंह छूतहरू को' रे छूतहरूआ 'कहकर बुलाते थे जिनके दरवाजे पर बैठते भी नहीं थे बाबू साहब, आज देखिए उसी दरवाजे की पूजा कर रहे है बाबू चंद्रदेव सिंह।"

**जहाँ जात बरय दिन राती':**

'जहाँ जात बरय दिन राती' कहानी संक्रमण के कारण हो रहे सांस्कृतिक ऱ्हास को दर्शाती है। कहानी की प्रमुख स्त्री पात्र है,'कुसुमी'जो हरिजन हैं। एक लंगडे से ब्याही है। लंगडा गाने-बजाने मे माहिर है। अपनी पहचान वाली बड़की कनियाँ के यहाँ बच्चे की छठी पर वह गाने जाता है,तो इस बात का घुस्सा कुसुमी को आता है तब वह लंगडू को ताकीद देती है। और कहती है ि भी मांी है तो यहाँ गाँव में क्या मांगते हैं, कलकत्ता, पटना में जाये । इससे पता चलता है कि कुसुमी को लंगडू का यह व्यवहार पसंद नहीं है। कुसुमी अपनी खेती-बाड़ी में दिन रात मेहनत करके अच्छा जीवन बीताना चाहती है। लंगडू गाने का शौक भी घर पर ही करें । इस तरह से वह अच्छी जिंदगी जीना चाहती है। पर लंगडू कुसुमी को समझाने की कोशिश करता है कि वह भीख नहीं मांगता है, मैं तो अपनी कला की कदर करता हूँ और अपनी कला की कदर करनेवाले के ही पास गाने-बजाने जाता हूँ । लेकिन कुसुमी लंगडू के इस व्यवहार को भीख मांा समझती है और उसे यह सब करने से रोकती है।

**जन्मांतर :**

प्रस्तुत कहानी में विजातीय विवाह के दुष्परिणामों की चर्चा की गई है। प्रो.चंद्रभूषण जो अपनी मर्जी से पिता के नकार के बाद भी मनोरमा से प्रेमविवाह करते है। मनोरमा निचली जाति की लडकी है। और वह प्रो. चंद्रभूषण की सहपाठिनी है। प्रो. चंद्रभूषण अपने विवाह हेतु मातापिता, गाँव, धर्म को छोड़ने के पक्षधर दिखाई देते हैं। सालों बाद प्रो. चंद्रभूषण को तीन पुत्रियाँ होती है, निरजा, नेहा, प्रिया इन में से बडी बेटी निरजा अपने पिता की नकल करते हुये प्रेम विवाह का प्रस्ताव प्रो.चंद्रभूषण के सामने रखती है तब प्रो.चंद्रभूषण दुःखी होते हैं क्योंकि वह अपनी बेटियों का विवाह ब्राम्हण जाति में ही करना चाहते हैं। बल्कि निरजा अपना विवाह किसी फर्नांडिस से करना चाहती है। इस प्रकार से प्रस्तुत कहानी जाति व्यवस्था में आ रहे परिवर्तन को दर्शाती है।

**माटी पानी :**

प्रस्तुत कहानी जातिव्यवस्था में आ रहे बदलाव को दर्शाती है। मौजी चाचा जो नैसर्गिक आपत्ति से बेहाल है। उनके पुत्र सोनालाल जो एस. पी. बन चुके हैं। मौजी चाचा जाति से हरिजन हैं लेकिन पुत्र एस. पी. बन जाने से आत्मगौरवान्वित है। रामनरेश जो सोनेलाल के मित्र एवं सहपाठी है अब शिक्षक बन चुके है। मौजी चाचा और रामनरेश अपनी गाँव की सामस्याओं को लेकर सोनेलाल से मिलने जाते हैं। मिलने का प्रमुख कारण रहाता है रणविजय सिंह की गिरफ्तारी । पर जब रणविजय सिंह सोनेलाल के परिवार से इस कदर जुड़े होते हैं कि मौजी चाचा और रामनरेश की हिम्मत नहीं बाधती थी कि सोनेलाल से कहें कि रणविजय सिंह को गिरफ्तार करें जिसने गाँव के कुछ हरिजनों का कत्ल किया है। वह बिना शिकायत ही गाँव लौट जाते है।

मौजी चाचा के स्वप्नभंग की स्थिति को कहानी में रखा गया है। बेटा एसी.पी. है लेकिन उन अत्याचारियों के साथ मिला है, जिन अत्याचारियों ने हमेशा हरिजनों पर अत्याचार किये हैं। कितने स्वप्नों को लेकर मौजी चाचा सोनेलाल को पढ़ाते थे। लेकिन अचानक सब बदल जाता है। अपनी माटी का धान सामंती रूप कौआ का शिकार होता हुआ देख मौजी चाचा बेहद अंतर्पीड़ित होते हैं ।

**शो पर्व :**

'शोपर्व' कहानी पारिवारिक जीवन के विविध प्रसंगों की कहानी है। रामसागर बाबूजी का मृत्युसमय पास आ चुका है। वह मृत्युशय्या पर है छोटा लड़का सुधीर और बहू सेवासुश्रूषा में लगी है । सुधीर की माँ बहू-बेटी की सेवा से बहुत खुश हैं। रामसागर जी का बड़ा लडका अमर जो पढलिखकर लेक्चरर बना है । राँची में स्थायी है। मंझला लड़का लाल जो पटना में लेबर अफसर है । दोनों लड़के अपने पिता के अंतिमपर्व में मिलने आते हैं। लेकिन पिता का मृत्युपर्व उन्हें किसी उत्सव - सा प्रतीत होता है। उन्हे पिता के प्रति कोई हमदर्दी नहीं है पिता का मूँह देखकर वह अपने निजी जीवन जीते हैं। माँ तीनों बेटो का बर्ताव देखती है, रामसागर जी कहते थे कि अमर और लाल घर का नाम रोशन करेंगे बल्कि सुधीर घर की नौबत बना रहेगा। लेकिन माँ इन दोनों को अलग महत्त्व देती हैं । वह देखती हैं कि आज सुधीर इस शोकपर्व में संपूर्ण समर्पण दे रहा है अपने पढ़े लिखे दोनो बेटों से ऊँचा पद आज वह माँ की नजर में पाता है। छोटी बहू भी कर्तव्यपरायणता का वह आदर्श हमारे सामने रखती है, सुधीर के साथ साथ वह भी ऊँचा पद पाती है। आज की शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्यो की धज्जियाँ प्रस्तुत कहानी उड़ाती है।

**आंतकवादी :**

'आंतकवादी' कहानी में रेल्वे सफर के आंतकित प्रसंग का वर्णन किया या है। रेलगाडी का ट्-टायर स्लीपरमें लेखक, एक सज्जन और सामने नई दुल्हन और उसका पति बैठे हैं। ऊपर की जगह पर हॉकी के खिलाड़ी हैं शायद किसी कॉलेज से उनके ठीक नीचे सरदारजी बैठे हैं, जो अपनी जगह लड़कों के हाथों मे गई इस वजह से संतप्त रूप मे नीचे बैठे हैं। अचानक एक बजे किसी स्टेशन पर रेल रूकती है। रेल में दसबारा आंतकवादी घुस जाते हैं। सारे डिब्बे को लुटते है और अगले स्टेशन पर जब उतरने लगते हैं तब गहनों का गठ्ठा लिये एक आंतकवादी को उसके उतरने से पहले सरदारजी पकड लेते हैं। और लूट का सामान वापस लेने में कामयाब होते हैं। जिस सरदारजी से लड़के झगडते हैं और कुछ उन्हे आंतकवादी समझते हैं वही सरदारजी सब लोगों के काम आते हैं। यही भाव इस कहानी का है।

**विकल्प :**

'विकल्प' कहानी पारिवारिक टूटन की कहानी है। कहानी नायक मै और उनके बडे भाई गाँव में शिक्षा पाकर शहर में नौकरी करते हैं । इधर गाँव में इनकी माँ अकेली ही रहती है। दोनों बेटे माँ को बुलाते है पर माँ का वहाँ पर दिल नहीं लगता है। माँ पुनः गाँव लौट आती हैं। जब मैं 'गाँव आता है तो देखता है कि माँ के साथ यादव, शांती एलिझाबेथ (एक आदिवासी महिला) एक परिवार की तरह रह रहे हैं। यादव, यादव की पत्नी, बच्चे, शांती एलिजाबेथ इनका माँ के प्रति स्नेह देखकर लगता है कि वह एक ही परिवार के सदस्य हैं। तब मै सोचता है कि माँ ने 'विकल्प' में हमारे स्थान पर इन लोगों को चुन लिया है। हमारे दोनों भाइयो की कमी माँ ने इन लोगों से पूरी की है।

**अंतरा के बोल :**

'अंतरा के बोल' कहानी पारिवारिक है। कहानी का नायक सुधीर कुछ दिनों के लिए अपने गाँव चला जाता है। साथ में परिवार भी रहता है। तब वहाँ पर वह एक ओर अपने बचपन की यादों को याद करता है तो दूसरी ओर अपने बच्चे और पत्नी के चेहरे पर की मजबूरी को देखता है। वे लोग मजबूरन गाँव में रह रहे हैं, ऐसा उसे महसूस होता है। आठ दिन में उनकी मानसिकता का सुधीर अध्ययन करता है । एक ओर वह दिल्ली में बडा अफसर है। उसका बड़ा फ्लैट है। टि. व्ही. व्ही. सी. आर आदि अत्याधुनिक सुविधाओं से घर भरा पड़ा है। इसके बावजूद अपने घर में एक चीज की कमी को सुधीर महसूस करता है। और वह चीज उसे गाँव में अपने घर आने के बाद पता चलती है। जब वह गाँव आता है तो माँ, राकेश की पत्नी, प्रेम दीदी आदि का प्यार, लगाव देखकर वह महसूस करता है कि आंतरिक समाधान उसे यहाँ पर ही मिल सकता है। लेकिन दो संस्कृतियों के बीच फँसा सुधीर पुनः अपने वर्तमान में चल पडता है। उसका बचपन उसके लिए स्मृति भर रह जाता है। प्रस्तुत कहानी पारिवारिक टूटन के कारण हो रहे मानसिक भटकाव को दर्शाती है।

**दाई माँ :**

'दाई माँ' पारिवारिक कहानी है। अपने ही घर में समीर और निलंबर की माँ को दाई माँ और नौकरा-नी ब-नकर रहने की -नौबत आती है। माँ-बेटों के बीच बेटो का जो दिखावटी रूप है वह कहानी में दिखाई देता है। जब बेटी को भी माँ की जरूरत पड़ती है तो बार-बार चिट्ठियाँ भेजकर माँ को बुलाती है । संबंधों में यह नयापन माँ को अलग लगता है। सब अपने स्वार्थ हेतु माँ को चाहते हैं। समीर, निलंबर और बेटी अपनी औलाद की परवरिश से छुटकारा पाने के लिए और आजाद घुमने फिरने के लिए माँ का उपयोग करते हुए दिखाई देते हैं। अपनी ही माँ को 'दाई माँ' बनाकर माँ के दूध का कर्ज चुकाते हैं । संबंधो में आ रहे इस बिखराव को कहानी में रखा गया है।

**काल पात्र :**

'काल पात्र' कहानी अमरेश, अजय (ममेरे भाई) और रनवीर इन तीन मित्रों की है। अमरेश पढ़लिखकर शहर से गाँव आता है और अजय महीनों से गाँव से गायब है। गायब इसलिए है कि पुलिस फाड़ी खुली है।इस घटना का वह विरोध करता है। इस कारण पुलिस भी उसकी तलाश करती है। अजय,अमरेश और रनवीर एक ही पाठशाला में, एक ही संस्कारो में पढ़े लिखे और बड़े हुये लेकिन तीनों ने अलग-अलग भूमिका को पा लिया है। अजय समाज सेवक, अमरेश आपनी ही दुनिया में रममाण तो रनवीर कालपात्र की भूमिका निभा रहा है। वह राजनीतिज्ञ बनकर गाँव को पुलिस के सहारे लूटना चाहता है और इससे वह बहुत सारी पूँजी जमा करता है। इसी भावभूमि को लेकर यह कहानी लिखी गई है।

इस प्रकार से प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियाँ दिखाई देती हैं।

**निष्कर्ष :**

आजादी के बाद संक्रमण की प्रक्रिया जलद गतीसे हुई । जिसकारण हमारे भावविश्व पर गहरा असर हुआ । पारंपरिक मूल्यों की टूटन और नयी बातों का स्वीकार अंतर्मन की व्यथा का कारण बना है । प्रस्तुत कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है । पारिवारिक जीवन, जाति व्यवस्था, शिक्षा संबंधी हो रहे बदलाव को कहानियाँ अभिव्यक्ती देने में सक्षम दिखाई देती है ।

**संदर्भ :**

१. माटी-पा-नी - डॉ. रामधारीसिंह दिवाकर

**अलोने चंद्रशेखर त्रिंबक**

हिंदी विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता.जि. औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत,